11

ईज़ेबेल

शैतान की मिशनरी

वचन पाठ: 1 राजाओं 16:29-22:40

सुसमाचार प्रचारक: हमें उसका विवरण कैसे देना चाहिए? उसमें क्या विशेषताएं हैं और वह क्या करता है? वचन के परमेश्वर के सेवक के लिए आत्मा द्वारा नये नियम में इस्तेमाल किए गए विलक्षण यूनानी शब्दों को मिलाने से,[1] हमें एक पद्य की परिभाषा मिलती है:

> सुसमाचार प्रचारक मसीह जैसा, भक्तिपूर्ण मनुष्य, जो विश्वास और प्रेम से सुसमाचार की पूरी खुशखबरी को दृढ़ता से सुनाता है। उसे वह संदेश कहा जाता है जिसे पवित्र शास्त्र का अधिकार देकर भेजा गया है, जो सुसमाचार को मानने की आवश्यकता के बारे में अपने सुनने वालों को समझाता है और जो परमेश्वर के निमन्त्रण को मान लेने और इसमें चलने को कहता है।

प्रचार करने के किसी भी सही-सही सारांश में आगे दिए गए आवश्यक तत्वों जैसे तत्वों का स्पर्श होना आवश्यक है: (1) व्यक्ति का चरित्र, (2) प्रस्तुति का ढंग, (3) उसका उद्देश्य, (4) उसके काम का महत्व और (5) संदेश, जो वह देता है।

इन सभी खूबियों को एक व्यक्ति में इकट्ठा कर दिया जाए और ईश्वरीय संतुलन बनाए रखा जाए तो हमें इसमें परमेश्वर की योजना का सार मिलता है। सुसमाचार का प्रचार वह सबसे बड़ा कार्य है, जिसमें कोई भी मसीही लग सकता है।

एक ऐसे विचार को समझने के लिए, जो इस विचार से निकलता है, मान लें कि हम सिक्के को पलटकर शैतान के सेवक की ओर देखते हैं। उस व्यक्ति में कौन सी विशेषताएं होंगी? कुछ अपवादों के साथ, निश्चय ही वह सुसमाचार प्रचारक के विपरीत होगा। उसके विवरण को कुछ इस प्रकार पढ़ा जा सकता है:

> शैतान का प्रचारक शैतान जैसा व्यक्ति है, जो दृढ़ता से बुराई और पाप के पूरे संदेश को देता ही नहीं, बल्कि सुनने वाले की इच्छा के विरुद्ध उसे ग्रहण करने की मांग भी करता है। वह शैतान और उसके दूतों का सहकर्मी है, जिसे दुष्टता से प्रेरित और उत्तेजित करके भेजा गया है। वह दूसरों को शैतान का संदेश मानने के लिए कहता और ज़ोर देता है कि वे उसके संदेश को मानें, उसमें चलें और दूसरों को भी चलना सिखाएं।

ये दो अलग-अलग परिभाषाएं हमें उस आत्मिक युद्ध का स्मरण कराती हैं जो संसार में निरंतर लगा हुआ है। यह कभी न खत्म होने वाला, अर्थात अरमगिद्दोन का युद्ध है यानी भलाई और बुराई के बीच चलता रहने वाला झगड़ा है, जिसमें हम में से हर किसी को शामिल होना

आवश्यक है और जिसे सबके लिए जीतना या हारना निश्चय है। यह वह युद्ध है जिससे कोई बच नहीं सकता। अपनी स्वतन्त्र नैतिक पसंद के द्वारा इसमें झोंके जाने के कारण इसमें हमारा सामना हमेशा दो विकल्पों से होता है, अर्थात अनन्तकाल के दो अलग-अलग स्थानों में ले जाने वाले जीवन के दो अलग-अलग मार्ग दो अलग-अलग तरह के प्रचारकों को दर्शाते हैं। ये प्रचारक हमारे पास हर आकार और रूप के, हर व्यक्तित्व और गुण लेकर हर समय हर तरह से हमारे पास आते हैं।

आइए विशेषकर शैतान के कर्मचारी पर ध्यान लगाते हैं, परन्तु एक ही परिभाषा पर लटके रहने के बजाय हम उसका एक वास्तविक ईश्वरीय फोटो देखेंगे। किसी ने कहा है, ''इसे समझने का सबसे अच्छा ढंग उसे एक व्यक्ति में लपेट लेना है।'' ऐसे व्यक्ति का चित्रण उत्तरी राज्य के सम्राटों, ओम्री और येहू के बीच में बना है और इसे नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। इस तस्वीर को स्कैन करते हुए मांस और हड्डियां, शैतान के सेवक के हमारे विवरण में यहेजकेल के दर्शन वाले कब्रिस्तान की हड्डियों पर नसें और मांस चढ़ने की तरह आ जाएंगी (यहेजकेल 37)। फिर हम भयभीत करने वाला बोध देखेंगे कि किस प्रकार शैतान की धारणा काम करती है।

जिस तस्वीर को हम देखते हैं, वह पुरुष की नहीं, बल्कि एक स्त्री अर्थात एक असामान्य स्त्री की है, जो शैतान की वकालत करने वाली, जनूनी स्त्री है। ईज़ेबेल के अलावा वह और कोई नहीं है। उसका नाम शाही नाम का प्राय: है, क्योंकि वह सोर के राजा एतबाल की पुत्री और इस्राएल के राजा अहाब की पत्नी थी। वह इस्राएल के राजा यहोराम की माता; इस्राएल के राजा अहज्याह की दादी; और यहूदा के राजा यहोराम की सास थी। पाप की गहराइयों के कारण जिनमें वह चली गई थी और दूसरों को ले जाना चाहती थी, हम उसे शैतान की मिशनरी या प्रचारक कहेंगे। उसके जीवन में वह हर बात मिलती है, जो शैतान चाहता है कि उसके कर्मचारियों में होनी चाहिए।

हमारी मुख्य दिलचस्पी उत्तरी राज्य में प्रचार करने के उसके प्रयासों के ढंगों में है। उसके सब प्रयास लगभग पूरी इस्राएल जाति को बाल की पूजा के लिए घुटनों पर लाने के लिए थे। परिणामस्वरूप अहाब के शासन से इस्राएल के इतिहास में यहोवा की आराधना में सबसे बड़ी गिरावट आई।[2] किसी भी दृष्टिकोण से ईज़ेबेल को इस्राएलियों को विश्वास त्याग में ले जाने के उसके भयंकर कार्य में सफलता माना जाना था। उसने ऐसा कैसे किया? उसने किन तकनीकों का इस्तेमाल किया?

भावपूर्ण जोश

ईज़ेबेल की बिना किसी संदेह के एक खूबी, जिसने उसे बुराई की शक्तिशाली प्रोत्साहक बना दिया, भावनापूर्ण अथक जोश था। वह अपने मूर्तिपूजक धर्म की स्वतन्त्र सदस्य तो नहीं थी, परन्तु उसकी स्थानीय सदस्यता स्पष्ट और केन्द्रित थी। उसे जानने वाले हर किसी को मालूम था कि वह कहां खड़ी है और उसका इरादा क्या है। उसका समर्पण दिखावटी नहीं था यानी ऐसा नहीं था कि वह कभी बाल के लिए उत्तेजित हो और कभी न हो; बल्कि इस मूर्तिपूजा को फैलाने का निरन्तर प्रयास उसके अंग-अंग में था।

उत्तरी राज्य में आने के थोड़ी देर बाद उसे बाल के घृणित धर्म की खतरनाक और भयंकर

प्रतिनिधि के रूप में प्रसिद्धि मिल गई। यहोवा में विश्वास करने और इस्राएल के धर्म को मानने का साहस करने का प्रयास करने वाले हर व्यक्ति को ईज़ेबेल से झगड़ा करना पड़ता था।

इतिहासकार जोसेफस के अनुसार, ईज़ेबेल का पिता एतबाल (जिसे इतोबाल या इतोबलुस भी कहा जाता है[3]) अशेरा (16:31) का पुजारी था, जिसने अराम के सिंहासन पर कब्जा कर लिया था। फिनीकी देवता बाल के प्रति उसकी इतनी श्रद्धा से उसकी बेटी को बाल की उत्साही पुजारिन बनने की शिक्षा देने के लिए उत्साहित किया होगा। एक सच्चाई तो पक्की है कि यदि उसने उसे नहीं सिखाया तो किसी और ने सिखाया होगा और वह भी बड़ी अच्छी तरह, क्योंकि वह हर किसी को बाल के सामने झुकाने को तत्पर अपने धर्म की करो या मरो की सोच से अशान्ति बनाने वाली बन गई।[4]

उसका धर्म उसके परिवार के आड़े भी आ गया। उसके पति अहाब के आड़े उसका मिशन आ गया। वह अहाब के लिए नहीं, बल्कि अपने मूर्ति के देवता बाल के लिए अति प्रेम के साथ उत्तरी राज्य में आई। राजा के साथ विवाह करने का उसका उद्देश्य बहुत सारा धन और अपने धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए अवसर पाना था। इसलिए इस्राएल के लिए रानी के रूप में उसे स्वीकार करना अहाब और उसके पिता ओम्री के सबसे गलत निर्णयों में से एक था। 16:31 में ईज़ेबेल के साथ अहाब के मिलन को वह पाप कहा गया है, जो यारोबाम के सोने के बछड़ों के पीछे चलने से बड़ा है:

> उस ने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हल्की सी बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईज़ेबेल को ब्याह कर[5] बाल देवता की उपासना की और उसको दण्डवत किया।

बाइबल से सुझाव मिलता है कि ''उसका किया छोटे से छोटा काम'' यारोबाम की दुष्टता से अधिक होना था। ईज़ेबेल के साथ उसका विवाह और भी बुरा था। वह एक शक्तिशाली व्यक्तित्व थी, जो अहाब के पीछे की दुष्टात्मा जैसी थी। हम पढ़ते हैं कि ''सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जिसने अपनी पत्नी ईज़ेबेल के उकसाने पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था'' (21:25)।

अहाब ने स्त्री से नहीं, बल्कि एक धर्म से विवाह किया था, जो दुष्ट और बुराई में गिरता जा रहा धर्म था। ईज़ेबेल को प्रसन्न करने के लिए अहाब को बाल की पूजा के लिए सामरिया में जगह बनवानी पड़ी थी, जिसमें एक मन्दिर, बाल और अशेरा की वेदी, बाल की स्त्री साथी को दर्शाता लकड़ी का स्तम्भ था (16:32, 33)। मिज़ाज में दृढ़ इच्छा-शक्ति वाली स्त्री होने के कारण ईज़ेबेल ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कमज़ोर इच्छा-शक्ति वाले अपने पति को झुका दिया। कोई उसके रास्ते में रुकावट नहीं डाल सकता था।

नये नियम के मसीही उसके इतने समर्पण से सबक ले सकते हैं। सच्ची कलीसिया की पहली और प्रमुख आवश्यकता, सच्चे मन से समर्पण है, जो मसीह की अगुआई तथा संसार भर में सुसमाचार को फैलाने के लिए हर बलिदान देने के लिए तैयार हो। शिष्यता का यीशु का मापदण्ड बहुत ऊंचा और चुनौती भरा है (लूका 14:26)।

बाल के प्रति ईज़ेबेल के समर्पण ने पत्नी, माता और मित्र, जो उसे होना चाहिए था, के रूप में उसे भ्रष्ट कर दिया। ईज़ेबेल बाल की पूजा की शिक्षा देने से तैयार होने वाली सही स्त्री थी। बाल की पूजा के प्रति समर्पण किसी को भी भले में नहीं, बल्कि दुराचारी मनुष्य में बदल सकता था। ईज़ेबेल वैसी ही हो गई थी, जैसा वह था जिसकी वह पूजा करती थी।

मसीहियत उन लोगों को जो मसीही बनते हैं, कभी भ्रष्ट नहीं करती। अपने पूरे स्वभाव तथा मनुष्य के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले इसके प्रभाव से मसीह के प्रति समर्पण पिताओं और माताओं को, पत्नियों और पतियों को, तथा मित्रों को प्रेम करने वाले बना देता है। हम अपने प्रियजनों को कम नहीं, बल्कि और अधिक प्रेम करने लगेंगे। हम उन्हें सही अर्थों में प्रेम करना सीख जाएंगे। जब हम परमेश्वर से वैसा प्रेम करते हैं, जैसा हमें करना चाहिए, तो हम एक-दूसरे से और संसार से वैसे प्रेम करने लगेंगे जैसा हमें करना चाहिए।

विनाशकारी गलती

ईज़ेबेल यह भी दर्शाती है कि शैतान का सेवक गलती अर्थात दोषी ठहराने वाली गलती की वकालत करता है। परमेश्वर ने हर वयस्क को सिखाने की ज़िम्मेदारी दी हुई है (इफिसियों 6:1-4; नीतिवचन 22:6), परन्तु उसने हमें इस चेतावनी के साथ कि हम केवल उसी की सच्चाई की शिक्षा दें, हमें यह ज़िम्मेदारी दी है (यूहन्ना 8:32)। इसलिए सिखाने की ज़िम्मेदारी बड़ी गम्भीर ज़िम्मेदारी है, जिसे बड़ी सावधानी से पूरा किया जाना चाहिए और किसी भी प्रकार इसे हल्के ढंग से नहीं लिया जाना चाहिए (याकूब 3:1, 2)। ईज़ेबेल ने सिखाने की ज़िम्मेदारी तो स्वीकार कर ली, पर उसने गलत शिक्षा देने अर्थात दुष्ट धर्म की की शिक्षा देने अर्थात परमेश्वर की आज्ञा के विपरीत सिखाने की गम्भीर गलती की।

शैतान के प्रचारक की इस तस्वीर में हम दिल की गुहार को देखते हैं: बहुगुणी प्रतिभा वाली ईज़ेबेल ने अपने आप को गलत शिक्षा देने में लगा दिया! अपनी ऊर्जा को यदि वह ऐसे ही परमेश्वर की पवित्र सच्चाई को बताने में लगाती तो हम उसका सम्मान एक नायिका के रूप में अर्थात परमेश्वर के महान लोगों की सूची में डालते। उसने अपने आप को झूठ के प्रचार के लिए दे दिया। इसलिए हम उस पर अफसोस करते हैं, उसे तुच्छ जानते हैं, उससे दूर रहते हैं और कहीं न कहीं हमारे मन में है कि हम अपने बच्चों का नाम उसके नाम पर न रखें। उसने केवल अपने जीवन को बर्बाद ही नहीं किया, बल्कि एक झूठे धर्म की खातिर उसने अपनी जान गंवा दी।

चौदहवीं शताब्दी ई.पू. से मिली उगारी सामग्री से हमें बाल की पूजा किए जाने के बारे में काफी पता चला है[f] ऐसा लगता है कि बाल की पूजा वर्ष के बरसात और सूखे के मौसम पर आधारित थी, जो विशेषकर पलिश्तीन इलाके की विशेषता थी। बाल मिथ्या के अनुसार बाल और अनात भाई बहन होने के साथ-साथ प्रेमी भी थे। बाल की हत्या उसके शत्रु मृत्यु के देवता मोट ने की और उसे खा लिया था। बाल भूमि में से फसल उपजाता था, जिस कारण उसकी मृत्यु से सूखा मौसम बना और वनस्पति मर गई। अनात, या अशेरा, जैसा कि पुराना नियम उसे कहता है (16:33) बाल को ढूंढ़ने के लिए चली गई। यह पता लगने पर कि मोट ने उसके साथ क्या किया है, उसने मोट पर हमला करके उसे मार दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उसका मांस छोटे-छोटे टुकड़े कर पक्षियों के खाने के लिए खेतों में बिखेर दिया। मोट की टुकड़े खेतों के ऊपर

बिखेर दिए जाने के बाद बाल फिर से जीवत हो उठा। दोनों प्रेमियों के बीच सहवास से एक बार फिर भूमि वर्षा होने से उपज देने लगी। इस प्रकार बाल के धर्म में हर प्रकार की शारीरिक बुराई, जैसे कि धार्मिक वेश्यागमन आदि पाए जाते थे। यह गिरावट, मिथ्या और अनैतिकता का अविश्वसनीय धर्म था, जो जड़ तक गन्दा और बुरा था।

इस धर्म को यहोवा की आराधना की जगह आरम्भ करने की ईज़ेबेल की मंशा उसके कार्यों की अति मूर्खता को दिखाती है। स्पष्टतया वह यहोवा, अर्थात इस्राएल के परमेश्वर और सब जातियों के परमेश्वर से घृणा करती थी। वह उसकी आराधना को खत्म करके अपनी शक्ति के अधीन आने वाली हर बात को वास्तविकता देना चाहती थी। हर दिन संसार के सामने आने से पहले वह बुराई में नहाती होगी।

परमेश्वर के सच्चे धर्म का प्रचार करना सबसे समझदारी वाला और सबसे अच्छा प्रयास है, जिसे मनुष्य जान सकता है। परन्तु छद्म विश्वास की वकालत करना सबसे अधिक समय और ऊर्जा बर्बाद करने वाला, दूसरों के लिए किया जा सकने वाला सबसे बेकार काम है। परमेश्वर का सच्चा धर्म मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता और सबसे बड़ी आशीष है; धार्मिक गलती मनुष्य का बड़ा श्राप और सबसे बुरी आफत है। परमेश्वर का धर्म बचाता और चंगाई देता है; विश्वास से हटने वाला धर्म दोषी ठहराता और नष्ट करता है।

शैतान आराधना करने की मनुष्य की इच्छा को मिटा नहीं सकता; परन्तु वह उस इच्छा को किसी सीमा तक झूठे, अर्थात जीवन और आराधना की इन्द्रियों को संतुष्ट करने वाले प्रबन्ध से संतुष्ट कर सकता है। ईज़ेबेल के द्वारा शैतान ने परमेश्वर की आराधना के लिए मनुष्य के भीतर की इच्छा की जगह मूर्तिपूजा करवानी चाही। उसका उद्देश्य मनुष्यजाति को परमेश्वर के धर्म के लिए शैतान के विकल्प के साथ दूषित करना, जलील करना और गिरना था।

दुष्ट बल

शैतान के दूत के रूप में ईज़ेबेल ने अपने धर्म के लिए इस्राएल में जगह बनाने के लिए दुष्ट बल का इस्तेमाल किया। शाही बल और सताव की कटाई के साथ उसकी शिक्षा थी।

वह इस्राएल में बहुत सारा समय लेकर आई। उसके चेले चाटों में बल में 450 नबियों सहित बाल के 400 के करीब अन्य याजक भी थे। उनका काम प्रभाव की मज़बूत भुजा के साथ पूरे इस्राएल में जाना और लोगों को बाल को मनाने वाले बताकर लौटना था। उनकी शिक्षा और बल का असर पूरे देश में महसूस किया जा सकता था।

कानूनी तौर पर ईज़ेबेल राजा की पत्नी ही थी न कि देश की शासक, पर उसने यहोवा के उन नबियों तक अपना प्रभाव बना लिया था, जिन पर उसके नौकर अपना हाथ डाल सकते थे (18:4-13)।[7] वह अपने को परमेश्वर की जगह रखकर खुद फैसले लेती थी कि कौन जीवत रहेगा और कौन मरेगा। लगता है कि उसका नियम यह था कि "जो भी यहोवाह का नबी है, वह मार डाला जाए और अगर मुझे मिल जाए तो मार डाला जाएगा।" कुछ नबियों ने आतंक के शासन से भागकर जान बचाई, पर परमेश्वर के बहुत से नबियों को उसकी कातिलाना चालों के कारण जान गंवानी पड़ी।

अहाब के एक सेवक ने किसी न किसी तरह एक सौ नबियों को गुफाओं में छिपा दिया और

खाना खिलाता रहा। इस प्रकार उसने उन्हें निर्दयी आक्रमण से बचाया।

> क्या मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया कि जब ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को घात करती थी तब मैं ने क्या किया? कि यहोवा के नबियों में से एक सौ लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा, और उन्हें अन्न जल देकर पालता रहा (18:4; देखें 18:13)।

कर्मेल पहाड़ के बड़े मुकाबले के बाद ईज़ेबेल ने एलिय्याह को मरवाने की कोशिश की पर वह सफल न हो सकी (19:1, 2)।

हम यहां एक सबक सीख सकते हैं। शैतान बल का इस्तेमाल करता है, पर मसीही लोग नहीं। परमेश्वर के लोगों को कभी भी चालबाज़ या किसी भी प्रकार के अत्यधिक बल का सहारा नहीं लेना चाहिए, जो सताव से बहुत कम है। मसीहियत ''पकड़कर सिखाना'' है न कि किसी के मन में ज़बर्दस्ती डालना। यदि इसे पापी द्वारा उत्सुकतावश और गम्भीता से नहीं चुना जाता तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसने इसे स्वीकार नहीं किया। मसीह के पास आने का एकमात्र ढंग *अपने मन में* (रोमियों 10:10) विश्वास कर *अपने मन से* (रोमियों 6:17) सुसमाचार की आज्ञा मानना है। किसी के द्वारा भी, किसी भी प्रकार ज़बर्दस्ती मन से पमरेश्वर की बात मानने को नकार देती है।

दो जवान स्काउट लड़के नगर के मुख्य बाज़ार में एक दुकान में गए। उनके माथे से पसीना गिर रहा था और मुंह की हवाइयां उड़ी हुई थीं, ऐसे लग रहा था जैसे किसी रीछ ने उन्हें दबोचा हो। क्लर्क ने पूछा, ''तुम दोनों क्या कर रहे हो?'' एक लड़के ने उत्तर दिया, ''हम दिन का अपना भला कर रहे हैं। हम एक बूढ़ी स्त्री को सड़क पार करवा कर उसकी सहायता कर रहे थे।'' क्लर्क ने पूछा, ''सचमुच'' और फिर मुस्कुराया। ''कितनी अच्छी बात है, बेशक यह कोई मुश्किल काम नहीं था, तुम इतने गर्म क्यों हो और तुम्हारे पसीने क्यों छूट रहे हैं?'' दूसरे लड़के ने भोली सी सूरत बनाकर कहा, ''पर वह सड़क पार करने को तैयार नहीं थी।''

ईज़ेबेल के बाल की सेवा बल के साथ करना भी ऐसा ही था। उसने लोगों को बाल की पूजा करने के लिए मज़बूर किया, चाहे वे उसकी पूजा नहीं करना चाहते थे और उसने परमेश्वर के नबियों को मरवा दिया। उसकी चालों में परमेश्वर और शैतान के बीच के मूल अन्तर पर ज़ोर था। विश्वास और प्रेम से निर्णय लेने का अवसर देकर परमेश्वर मानवीय हृदय का सम्मान करता है। शैतान ऐसा नहीं करता। परमेश्वर अपनी सेवा के लिए आपको प्रेम से समझाएगा पर शैतान अपने से अपनी सेवा *करवाने* के लिए, आवश्यकता पड़ने पर आपको मार भी सकता है।

क्रूर स्वार्थ

पंक्तियों के बीच पढ़ते हुए हम देखते हैं कि ईज़ेबेल अत्यधिक स्वार्थ में डूबी हुई थी। उसका जीवन ऐसा था, जैसे संसार उसी के इर्द-गिर्द हो!

सचमुच हमें ईज़ेबेल के मन को देखकर हैरान नहीं होना चाहिए। अगर हम पहले हैरान नहीं हुए हैं तो अब हैरान होंगे क्योंकि स्वार्थ से भरे जीवन के बिना कोई पूरी तरह से अपने आप को शैतान को नहीं दे सकता। पाप का मूल स्वार्थ में है। पापी वही है, जो परमेश्वर के मार्ग के बजाय

अपने ढंग को प्राथमिकता देता है।

अपनी जीवन शैली, पूजा और बुराई के प्रति समर्पण के प्रकाश में ईज़ेबेल के लिए नाबोत से छुटकारा पाना स्वाभाविक था, जिससे वह अपने पति के लिए नाबोत की दाख की बारी पर दावा कर सकती थी (21:15)। उसके लिए एक परिवार का कोई अर्थ नहीं था। उसके लिए लोग ''फैंके जाने वाली चीज़ें'' थीं। अगर कोई उसके रास्ते में आ गया तो उसके लिए उसे खत्म करने का सोचना खटमल को मारने से भी आसान था। स्वार्थ के कारण उसे लोगों का महत्व, सच्चाई और भलाई कुछ दिखाई नहीं देता था, जिससे उसके मन में एक ही शब्द भर गया था, ''मैं।''

फिर मसीहियत और शैतान के कर्म के बीच में स्पष्ट अन्तर त्याग और स्वार्थ में देखा जा सकता है। मसीह दूसरों के लिए जिया और मरा जबकि मसीही लोग दूसरों से प्रेम करते और उनके लिए जीते हैं। अपवित्र लोग मांग करते और लाभ से पकड़ते हैं; वे धमकाते, प्रमुख स्थापित करते और बुरा बर्ताव करते हैं। मसीह ने अपने चेलों को मानवता की सेवा करना सिखाया, जबकि शैतान अपने चेलों को सिखाता है कि अपनी मर्जी मनवाने के लिए मनुष्य से कैसे सेवा लेनी है।

ईज़ेबेल अपने लिए जीने में निपुण थी; वह प्रदर्शित A थी, जिसे शैतान अपने कर्मियों में देखना चाहता है। वह पाप और स्वार्थ का मूर्तरूप थी। उसके धर्म की मुख्य विशेषता ''मैं'' से शुरू होती थी।

पक्के तौर पर आज्ञा न मानना

अपने जीवन के अन्त तक ईज़ेबेल का चरित्र दुष्ट ही रहा। उसने कभी मन नहीं फिराया, अर्थात वह कभी परमेश्वर की ओर फिरकर सच्चाई की ओर नहीं आई। गलत बालों में विश्वास करने और पाप के धोखे के कारण उसका मन कठोर हो गया था। उसे सच्चे परमेश्वर को जानने के अवसर मिले, पर उसने उन्हें ऐसे फैंक दिया, जैसे ऐसा कूड़ा हो, जिसे जल्दी से जल्दी कूड़ेदान में फैंकना आवश्यक होता है। कई बार उसे परमेश्वर के नबियों से वचन सुनने का अवसर भी मिला पर वह सुनने से इनकार कर देती। अपनी आंखों को बन्द करके और कानों में उंगली डालकर उसने अपने मन को सच्चाई को मानने नहीं दी।

पूरे इस्राएल के साथ ईज़ेबेल को कर्मेल पहाड़ पर एक बड़े मुकाबले के लिए बुलाया गया कि वह हमेशा के लिए मान ले कि एक सच्चा परमेश्वर कौन है (1 राजाओं 18)। उसने जाने से इनकार कर दिया। उसका मन पहले से बना हुआ था और तथ्यों को जानकर वह उलझन में नहीं पड़ना चाहती थी!

1 राजाओं 20:1-4 में हम पढ़ते हैं कि बेन्हेदद और बत्तीस अन्य राजाओं ने सामरिया को घेर कर उस पर चढ़ाई कर दी। सामरिया की हार इतनी स्पष्ट थी कि अहाब ने माना कि बेन्हेदद उसकी पत्नियों, बच्चों, चांदी और सोना ले जा सकता है! सारी आशा जाती रही थी; अहाब के हरम (ज़नानखाने) के अन्य लोगों के साथ उसे भी युद्धबन्दी की तरह रहने के लिए बेन्हेदद के पास लौटाया जाना था। बाद में जब यहोवा ने ईज़ेबेल और अन्य पत्नियों को बेन्हेदद के हाथ से छुड़ाया तो उसने उसका कोई आभार व्यक्त नहीं *किया*। उसका देवता बाल उसे बचा नहीं सका था। उसे मालूम था कि यहोवा ने उसे मूर्तिपूजक राजा के चंगुल से छुड़ाया है, पर उसके कठोर मन ने सच्चाई का विरोध ऐसे किया जैसे टीन की छत पर बारिश की एक छोटी सी बूंद पड़ने पर होता है।

ईज़ेबेल की हत्याओं और परमेश्वर के नैतिक और धार्मिक नियमों का उल्लंघन करने के कारण उसके विरुद्ध एक भयानक, ईश्वरीय दण्ड सुनाया गया। यिज्रेल की दीवार के पास कुत्तों ने उसकी लाश को खाना था। बाद में जवान नबी, जिसने येहू को राजा अभिषिक्त किया था, ने उसे परमेश्वर का दिया काम पूरा करने का आदेश दिया (2 राजाओं 9:7-10)।

यह भविष्यवाणी बिल्कुल वैसे ही पूरी हुई। अहाब के मरने के ग्यारह वर्ष बाद, येहू ने राज घराने को निर्दयतापूर्वक बदला लेने के लिए मार दिया। न्याय की परमेश्वर की गाड़ी स्टेशन पर आने पर ईज़ेबेल आंखों में सुरमा लगा, अपना सिर संवार कर खिड़की में से झांकने लगी (2 राजाओं 9:30-32)। निकट आने पर उसने येहू को पुकारा, "हे अपने स्वामी के घात करने वाले जिम्री क्या कुशल है?"[8] येहू ने खिड़की की ओर देखा और कहा, "मेरी ओर कौन है? कौन?" (आयत 31)। दो तीन खोजों ने उसकी ओर देखा। येहू ने आदेश दिया, "उसे नीचे गिरा दो" (आयत 32)। उन्होंने बिना हिचकिचाहट के उसे नीचे गिरा दिया। ईज़ेबेल उसके रथ के सामने गिर गई। उसने जान बूझकर रथ उस पर चढ़ा दिया, जिससे उसके लहू के छींटे घोड़ों पर और दीवार पर पड़ गए। लगभग एक घण्टे बाद यह याद करके कि मरी हुई वह स्त्री राजा की बेटी थी, येहू ने उसे दफ़नाने की आज्ञा दी; पर सिपाहियों ने देखा कि पूर्वी नगरों के मुर्दाखोर कुत्ते पहले ही उसका मांस खा चुके थे और खोपड़ी, पांवों और हथेलियों और हाथों को छोड़कर सब खा गए थे। इस घटना के बाद हम पढ़ते हैं:

> सो उन्होंने लौटकर उस से कह दिया; तब उस ने कहा, यह यहोवा का वह वचन है, जो उस ने अपने दास तिशबी एलिय्याह से कहलवाया था, कि ईज़ेबेल का मांस यिज्रैल की भूमि में कुत्तों से खाया जाएगा। और ईज़ेबेल की लोथ यिज्रैल की भूमि पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी, यहां तक कि कोई न कहेगा, यह ईज़ेबेल है (2 राजाओं 9:36, 37; देखें 1 राजाओं 21:23)।

परमेश्वर का न्याय उसके विरुद्ध पूरी तरह से पूरा हो गया था। ईज़ेबेल ने मरने तक अपने हृदय को कठोर बनाए रखा। वह अपनी बुराई की कीमत चुकाने तक शैतान के काम के प्रति निष्ठावान थी।

चालाक शैतान का कर्मचारी अन्त तक उसके उद्देश्यों के प्रति वफ़ादार होना आवश्यक है। उसका हृदय केवल कुछ देर के लिए कठोर नहीं हुआ। उसे अपने जीवनकाल के लिए मुर्दा दिल को दिखाना आवश्यक है। उसका जीवन समर्पित दिखाई देना चाहिए। यदि कोई थोड़ी देर के लिए शैतान की सेवा करता है और फिर पलटकर परमेश्वर की ओर मुड़ जाता है और उसकी सेवा करने लगता है तो उसके मन परिवर्तन से दूसरों को शैतान के पीछे चलने की उसकी मूर्खता का पता चल जाएगा। जब सताने वाला शासक सताया जाने वाला पौलुस बन गया तो शैतान ने अपना महत्वपूर्ण सेवक खो दिया और परमेश्वर को अपना सबसे प्रभावशाली मिशनरी मिल गया। अपने दुष्ट जीवन के कड़वे परिणामों को भुगतने तक शैतान की सेवा में लगे रहने वाला व्यक्ति शैतान के लिए बेहतरीन विज्ञापन है।

ईज़ेबेल के मरने तक बुराई का साथ देने वाली सेवा ही थी। उसने कभी सच्चाई के आगे हार नहीं मानी। जब मौत उसके निकट आई तो उसने उसे परमेश्वर के प्रति विद्रोही मन से देखा।

अनन्तकाल की सांस ने भी उसके पापी मन को नरम नहीं किया।

सारांश

मूर्तिपूजक प्रचार के ईज़ेबेल के ढंगों को देखकर अब हम उसका फोटो रखते और जो कुछ हमने सीखा है, उस पर विचार करते हैं। मैं जानता हूं कि यह सजीव रंगों वाला, मांस और लहू का चित्रण इतना मोहक नहीं है। हमने गलती, स्वार्थ, अनचाहा बल और दुष्ट मन देखें हैं। यह तस्वीर हमें याद दिलाती है कि सुसमाचार के प्रचार में क्या *नहीं* किया जाना चाहिए। हमें सच्चाई के लिए सरगरम होना चाहिए न कि गलती के लिए। हमें मूर्तिपूजा के लिए नहीं, बल्कि सच्चाई के लिए प्रेम रखना, जीना और परिश्रम करना आवश्यक है। हमें किसी को मसीह में लाने के लिए मसीह के नि:स्वार्थ मन को लेना है न कि ज़बर्दस्ती, ज़ोर या दबाव का। हमें उनको सिखाना है, हां, पर मसीह की बात मनवाने के लिए मारना या धमकाना नहीं है। हम दूसरों से आग्रह करेंगे, पर उनसे छल नहीं करेंगे। गलती करने पर हमारे सामने अपने आपको कोमल रखते हुए प्रभु के सामने मनों को खोलते हुए मन फिराने की चुनौती दी है।

कितने दुख की बात है कि ईज़ेबेल ने परमेश्वर की सच्चाई को नहीं जाना, उसके आगे झुकी नहीं और देश के लिए धर्मी जीवन का उदाहरण नहीं दिया! कितना दु:खद है कि उसकी मृत्यु आशा रहित मूर्तिपूजा में हुई, जिसमें वह सोर में पली बढ़ी थी! सदियों से कितने ही और लोगों ने सच्चाई से इनकार करके, रोशनी के बजाय अन्धकार को प्रिय जानकर ईज़ेबेल का अनुसरण किया है?

कितने शर्म की बात है कि इस्राएल और यहूदा के राजाओं ने उस प्रकार जीवन व्यतीत नहीं किया कि यहोवा के प्रति उनके समर्पण से ईज़ेबेल अपने दुष्ट मार्गों से पलट कर सच्चे परमेश्वर में विश्वास करती! यह दु:ख की बात है कि उन्होंने इस्राएल के भविष्य पर उसे इतना कड़ा हाथ डालने से रोकने के लिए और इसकी आने वाली पीढ़ी को मूर्तिपूजा से रोकने के लिए यहोवा से उतना प्रेम नहीं किया।

इस कारण ईज़ेबेल की जीवनी मौत के साथ चलना है। वह जीते जी मर गई थी और उसकी मौत सबसे भयंकर मौतों में से एक थी। ईज़ेबेल का स्मरण भी दुष्ट मार्गों और अनैतिकता का पर्याय ही उपलब्ध कराता है (प्रकाशितवाक्य 2:20)। गलती के लिए जीना मूर्तिपूजक धर्म के खराब अर्थात उसकी तरह अन्धकार पूर्ण रीतियों के लिए जीना नरक का स्वागत करना है। इस रास्ते को कौन चुनना पसन्द करेगा? यह जीवन भयानक है और इसका अन्त उससे भी बुरा है। मसीही प्रचारक का जीवन कई बार कठिन होता है पर सेवानिवृत्ति के लाभ ''इस संसार के बाहर'' हैं। शैतान के मिशनरी का जीवन बुराई से नष्ट होता है और इसका अन्त बिना परमेश्वर के मरने का अर्थात परमेश्वर के न्याय के दण्ड के अधीन विदा होने का रूखा पल है।

शैतान मिशनरी को बदले में सिक्का देता है। एक अर्थ में उसे मिशनरियों को उनके परिश्रम की कीमत देनी चाहिए, क्योंकि मरने वाले तो वे थे न कि शैतान। आपको किसी ऐसे व्यक्ति के लिए काम करना कैसा लगेगा, जिसे अन्त में आपके काम के लिए आपको अपने आपको देना पड़े? जैसा कि ईज़ेबेल ने पाया, शैतान चाहता है कि उसके लिए काम करने के बदले में आप उसे वेतन दें।

अन्त में ईज़ेबेल बुराई के हर पहलू अर्थात इसके जीवन, इसके स्वभाव, दूसरों पर इसके प्रभावों और सबसे बढ़कर इसकी निराश को दर्शाती है। उसका जीवन इस बात का स्मारक है कि क्या नहीं करना चाहिए, जो यह याद दिलाता है कि कौन सी गलतियां न की जाएं।

यिज़्रैल की भूमि पर उसकी खोपड़ी, हाथों और पांवों को पड़े देखकर हम उसकी कब्र के पत्थर के लिए रोमियों 6:23 के शब्द ही बता सकते हैं, वे शब्द जो शैतान के काम के लिए अपने आपको देने वाले सब लोगों को मिलने वाले प्रतिफल का विवरण है: ''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, ...'' ईज़ेबेल ने अपने स्वामी शैतान के लिए जो कुछ कर सकती थी किया। उसका प्रतिफल उसे क्या मिला? मृत्यु!

सीखने के लिए सबक:
शैतान के सब सेब सड़े हुए हैं।

टिप्पणियां

[1]मैंने जिन शब्दों का चयन करने का निर्णय लिया है, वे हैं euggalizo (यूगलिज़ो), kataggelo (कैटागेलो), karusso (करुसो), Laleo (लेलियो), Parresoazomai (पैरेसियोज़ोमई), Pleroo (प्लेरू) और Parakaleo (पैराकेलियो)। मेरे विचार से पवित्र आत्मा द्वारा नये नियम के प्रचार को परिभाषित करने के लिए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। [2]अहाब का शासन यहूदी इतिहास में एक नया मोड़ था। इसी समय में वास्तविक रूप में ''संसार को सबसे निर्णायक युद्धों में से एक'' लड़ा गया। यह युद्ध परमेश्वर और बाल के बीच था। (एच.डी.एम. स्पेंस एण्ड जोसेफ़ एस. एक्सेल सामा. संस्क. पुलपिट कमैंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950], अंक 5, फर्स्ट किंग्स द्वारा जे. हेमण्ड, 373). [3]''....[असेरिमुस] की हत्या उसके भाई फेलस ने कर दी, जिसने राज्य ले लिया और केवल आठ माह शासन कर पाया, चाहे उसकी उम्र पच्चास की ही थी: उसे अस्टार्ट के याजक इतोबाल [एतबाल] ने मार डाला, जिसने बत्तीस साल राज किया: उसकी जगह उसका बेटा बेडज़ोरस गद्दी पर बैठा, ... (जोसेफस अगेंस्ट एपियोन, 1.18)। [4]हमें पक्का यकीन है कि देवता को मेलगर्ट कहा जाता था और सोर के लोग फलस्तिनियों को सन्तान के देवता का नाम देते थे। [5]''सीदोनियों'' को फीनीके के लोगों का पर्याय माना जाना चाहिए। सीदोन का नाम पुराने नियम में फीनीके के प्रमुख नगर के रूप में आता है, और कई बार इस नगर का इस्तेमाल पूरे देश के लिए किया जाता है। फीनीके की राजधानी सोर थी। [6]इसमें से कुछ सामग्री का अनुवाद जे.बी. प्रिचर्ड, सं. द. एसिएंट नीयर ईस्ट: एन एंथोलॉजी ऑफ़ टैक्सस एण्ड पिक्चर्स (प्रिंसटन, न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1965), 92-118 में किया गया है। [7]प्रश्न पूछा जा सकता है ''ईज़ेबेल के लिए परमेश्वर के नबियों को मारना गलत क्यों था, जबकि एलिय्याह और कर्मेल पहाड़ पर उसके पास खड़ी लोगों की भीड़ द्वारा बाल के नबियों को मारना सही माना जाता है?'' इस प्रश्न का उत्तर देते समय कई बातों को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। पहली बात तो यह कि बाल के नबी वे जल्लाद थे जिन्हें ईज़ेबेल द्वारा परमेश्वर के नबियों को घात करने के लिए भेजा गया था। इसलिए उन्हें हत्यारे कहना उचित होगा। दूसरा, बाल के धर्म को जितना भी गलत कहा जाए, सही है। इस धर्म में की जाने वाली पूजा पद्धति में हर प्रकार के अवैध शारीरिक सम्बन्धों तथा बच्चों की बलियां शामिल थीं। पुराने नियम की व्यवस्था में इन सभी पापों को दोषी ठहराया गया था और इसके लिए मृत्यु दण्ड आवश्यक था। एलिय्याह झूठे नबियों के सताव को खत्म करने के लिए, जो इस्राएल को व्यर्थ और मूर्खता के पापों में ले जा रहे थे, प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की अधीनता में चल रहा था। इसी कारण बाल के नबियों को परमेश्वर की ओर से मृत्यु का दण्ड मिला; बाद में ईज़ेबेल को भी मिला। [8]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने एक पद्य लिखा है जो इस दृश्य का अच्छा सार है: ''मरने के दिन तक उसका रानी वाला बना रहा; और वह अपने पद के पूरे वैभव में, शान-ओ-शौकत के साथ मरी, जिसमें उसका चेहरा और सिर सजाया गया (उसे सम्भवतया मुकुट पहनाया गया)। यह याद दिलाते हुए कि जिम्री को उसके कामों का फल मिल गया है, उसने येहू को घात करने वाला अर्थात एक और जिम्री कहा'' (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, सेकंड किंग्स [अबिलेन, टैक्सस: एसीयू प्रैस, 1992], 124)